



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आजमगढ़ जनपद में कृषि भूमि उपयोग का फसल वितरण का प्रारूप तथा समस्या एवं सुझाव

शोध निर्देशक

डॉ० संजय कुमार शर्मा
अध्यक्ष एवं एसोसिएट
प्रोफेसर हिन्दू कालेज
मुरादाबाद, भूगोल विभाग

शोधार्थी

राज नरायन प्रजापति
भूगोल विभाग
हिन्दू कालेज, मुरादाबाद
एम०ए०, नेट, एम० फिल०

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र आजमगढ़ जनपद कृषि भूमि उपयोग में परिवर्तन एवं इसके द्वारा पर्यावरणीय व अन्य प्रभावों को देखा गया है तथा इन कारकों का पता लगाकर कृषि भूमि परिवर्तन के बदलते हुए प्रभावों को कृषि से सम्बन्धित विकास हेतु कार्यक्रम एवं उपयोगिता विकास के क्षेत्र में नवीन कृषि नीति के माध्यम से कृषि के प्रत्येक क्षेत्र में मजबूत करने एवं भावी कृषि विकास नियोजन को सहायता मिलेगी। शोधार्थी अपने शोध क्षेत्र में कृषि भूमि उपयोग तथा कृषि नीति, कृषि विकास, फसल प्रतिरूप के अन्तर्गत सामाजिक, आर्थिक प्रभावों पर कृषि क्षेत्र की उपयोगिता का भौतिक एवं सांस्कृतिक कारकों के द्वारा जनसंख्या वृद्धि औद्योगिक विकास के सन्दर्भ में पर्यावरणीय प्रभावों का मूल्यांकन करके समाधान एवं नियोजन के लिए सुझाव प्रस्तुत किया जायेगा तथा कृषि भूमि उपयोग के परिवर्तन एवं पर्यावरणीय समस्याओं को जनहित में अवगत कराकर टिकाऊ संपोणीय विकास की योजना एवं विकास के स्वरूप एवं पर्यावरणीय समस्या के अन्तर्सम्बन्ध का मूल्यांकन होगा।

प्रस्तावना:-

भूमि उपयोग शब्द धरातल के स्वाभावित लक्षण का बोध होता है। जिस भू भाग का उपयोग प्राकृतिक रूप से हो रहा हो तो उस भूभाग के लिए भूमि उपयोग शब्द का प्रयोग करना श्रेयस्कर होगा। किसी क्षेत्र के सम्पूर्ण भूमि का विभिन्न कार्यों के लिए किया जाने वाला उपयोग भूमि उपयोग कहलाता है अर्थात् जब भूमि उपयोग मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कृषि क्षेत्र में खाद्यान्न फसलों के उपयोग के लिए करता है उसे कृषि भूमि उपयोग कहते हैं। कृषि उपयोग भूमि प्राकृतिक प्रदत्त निःशुल्क उपहार है। मानव ने भूमि उपयोग का प्राकृतिक स्वरूप अब धीरे-धीरे परिवर्तन के फलस्वरूप पर्यावरणीय समस्याएँ बढ़ती जा रही है। कृषि भूमि उपयोग में परिवर्तन के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण भूमि उपयोग के प्रारूप में नियोजन संकल्पनात्मक दृष्टि नियोजन करने की आवश्यकता है। शोध छात्र आजमगढ़ जनपद के भौगोलिक परिदृष्टि से कृषि भूमि उपयोग के परिवर्तन के अन्तर्गत प्राकृतिक पर्यावरणीय समस्याओं के सापेक्ष में अध्ययन किया है "भारत में भूमि उपयोग सर्वेक्षण का कार्य भारतीय भूगोल वेत्ताओं द्वारा किया गया है। भूमि उपयोग सर्वेक्षण या शोध का सूत्रपात प्रो० एस० पी० चटर्जी के 1945-1952 पश्चिमी बंगाल के 24 परगना और हाबड़ा जनपद में किया गया था। इसके बाद प्रो० बी० एल० एस० प्रकाशराव ने 1947 में गोदावरी नदी के क्षेत्रों की भूमि उपयोग शोध सर्वेक्षण विवेचनात्मक अध्ययन किया था, प्रो० मो० शफी 1963 ने पूर्वी उत्तर प्रदेश के भूमि सर्वेक्षण विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है। आज भूमि उपयोग शोध एवं सर्वेक्षण सम्बन्धी कार्यों के लिए यू०जी०सी०आई० सी०एस०आर०

तथा भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद तथा आई०सी०आर० द्वारा सक्रिय रूप से कृषि भूमि उपयोग विकास हेतु प्रयत्नशील है।”

अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि:-

अध्ययन क्षेत्र आजमगढ़ उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वांचल क्षेत्र में 25° 28' से 26° 27' उत्तरी अक्षांश तथा 82° 41' से 83° 52' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है जो घाघरा (सरयू) तथा गोमती नदी के मध्य गंगा के मध्य मैदान में स्थित है। पूर्व से पश्चिम की लम्बाई 75 किमी० तथा उत्तर से दक्षिण 85 किमी० है जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4054 वर्ग किमी० है। 2011 की जनगणना के अनुसार 4612134 जनसंख्या तथा जनघनत्व 1138 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी० है। इस क्षेत्र में 297005 हे० भूमि कृषि क्षेत्र में उपयोग की जाती है। अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान घना बसा हुआ क्षेत्र है। यहाँ की जनसंख्या 70 प्रतिशत कृषि क्षेत्र से रोजगार प्राप्त करती है।



आजमगढ़ जनपद के कृषि भूमि उपयोग
सारणी सं० 1.1

फसलों का वितरण 2015-16 (हे०)

क्र० सं०	विकासखण्ड	कुल कृषि भूमि उपयोग का क्षेत्र	रबी	खरीफ	जायद
1	अतरौलिया	19763	9793	9781	189
2	कोयलसा	16397	6348	9866	183
3	अहिरौला	22327	9823	12395	109
4	महाराजगंज	25369	13310	11842	217
5	हरैया	29479	14139	15186	154
6	बिलरियागंज	24629	12407	12125	97
7	अजमतगढ़	25092	13275	11619	198
8	तहबरपुर	17914	9216	8541	157
9	मिर्जापुर	14801	7554	7037	210
10	मोहम्मदपुर	22741	11814	10839	88
11	रानी की सराय	16184	8114	7920	150
12	पल्हनी	12684	6691	5843	150
13	सठियाँव	19622	9927	9579	116
14	जहानागंज	22888	11740	11064	84
15	पवई	26652	13089	13300	263
16	फूलपुर	22565	11368	10964	233
17	मार्टीनगंज	29621	15655	13712	254
18	ठेकमा	26415	12350	13928	137
19	लालगंज	28832	15005	13720	107
20	मेंहनगर	25886	13087	12713	86
21	तरवां	28986	161623	14275	88
22	पल्हना	18234	9279	8903	52
	कुल ग्रामीण योग	497081	248607	245152	3322
	कुल नगरीय योग	1182	733	432	17
	कुल जनपद योग	498263	249340	245584	3339

अध्ययन क्षेत्र में कृषि भूमि उपयोग का फसल वितरण के अन्तर्गत क्षेत्रफल के विभिन्न प्रखण्ड में भिन्न-भिन्न फसलों का वितरण किया गया है, जिसमें अधिकतम फसल वितरण 2015-16 में जनपद कुल क्षेत्रफल 498263 हे० भूमि पर कृषि के विभिन्न प्रारूपों का अध्ययन किया जाता है। रबी की फसल, खरीफ की फसल, जायद की फसल वितरण का विभिन्न प्रखण्डों में विभाजित किया गया है। जनपद के अधिकतम क्षेत्रफल के प्रखण्ड मार्टीनगंज 29621 हे०, महाराजगंज 25369 हे०, हरैया 29479 हे०, लालगंज 28832 हे०, अजमतगढ़ 25092 हे०, पवई 26652 हे०, तरवां 28986 हे०, मेंहनगर 25886 हे०, के उच्च क्षेत्रफल के प्रखण्ड है तथा न्यूनतम स्तर के प्रखण्ड मिर्जापुर 14801 हे०, कोयलसा 16397 हे०, तहबरपुर 17914 हे०, पल्हनी 12684 हे०, रानी की सराय 16184 हे०, पल्हना 18234 हे०, भूमि के प्रखण्ड है।

फसल वितरण के आधार पर कुल ग्रामीण क्षेत्रफल 497081 हे० तथा नगरीय क्षेत्र 1182 हे०, है इस प्रकार रबी की फसलों का वितरण विभिन्न प्रखण्डों में उच्चतम स्तर के प्रखण्ड मार्टीनगंज 15635 हे०, लालगंज 15005

हे०, तरवां 14623 हे०, हरैया 14139 हे०, महाराजगंज 13310 हे०, पवई 13089 हे०, रबी के फसल वितरण के उच्च स्तर के प्रखण्ड है तथा न्यूनतम स्तर के प्रखण्ड कोयलसा 6348 हे०, पल्हनी 6691 हे०, तहबरपुर 7554 हे०, रानी की सराय 8114 हे० पल्हनी 9227 हे० भूमि के प्रखण्ड हैं।

अध्ययन क्षेत्र में खरीफ की फसलों का वितरण कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 245584 हे० भूमि पर की जाती है। फरीफ की फसलों का वितरण उच्चतम स्तर के प्रखण्ड हरैया 15186 हे०, तरवां 14275 हे०, टेकमा 13928 हे०, मार्टिनगंज 13712 हे०, लालगंज 13720 हे० भूमि पर खरीफ की फसलों का वितरण पाया जाता है तथा न्यूनतम स्तर के प्रखण्ड पल्हनी 5843 हे०, रानी की सराय 7920 हे०, तहबरपुर 7037 हे०, पल्हना 8903 हे० भूमि पर न्यूनतम खरीफ की फसलों का वितरण प्रदर्शित किया गया है।

जनपद के विभिन्न प्रखण्डों में जायद की फसलों का वितरण ग्रामीण क्षेत्रों में 3322 हे०, भूमि पर तथा नगरीय क्षेत्रों में 17 हे० भूमि पर कृषि की जाती है। जनपद के कुल कृषि भूमि में जायद की फसलों का वितरण 3339 हे० भूमि पर की जाती है। जायद की फसलों का उच्चतम स्तर के प्रखण्ड पवई 263 हे०, मार्टिनगंज 254 हे०, फूलपुर 233 हे०, महाराजगंज 217 हे०, तहबरपुर 210 हे० के प्रखण्ड है तथा न्यूनतम स्तर के प्रखण्ड पल्हना 52 हे०, जहानागंज 84 हे०, मेंहनगर 86 हे०, तरवां 88 हे०, मोहम्मदपुर 88 हे० भूमि पर जायद फसलों का उत्पादन किया जाता है। इस प्रकार शोधार्थी अपने शोध क्षेत्र में फसलों का वितरण कुल क्षेत्रफल का विभिन्न फसल वितरण के आधार पर वर्गीकृत किया है।

कृषि भूमि उपयोग की समस्या :-

“विश्व की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है लेकिन वर्तमान समय में कृषि करना अध्ययन क्षेत्र सहित विश्व का सबसे बड़ा जोखिम वाला व्यवसाय माना जाता है। क्योंकि प्राकृतिक तत्व तापमान, वर्षा प्राकृतिक आपदा, कीटों का आक्रमण आदि कारक कृषि उत्पादकता को प्रभावित करते हैं। विगत वर्षों में मौसम में परिवर्तन विशेषकर तापमान में हुई वृद्धि, वर्षा की परिवर्तनशीलता तथा मृदा प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन आदि कारकों के कारण कृषि उत्पादन पर पड़े प्रतिकूल प्रभाव के कारण जलवायु परिवर्तन पर विशेषज्ञों का मानना है कि मार्च और अप्रैल माह में 1⁰ सेंटीग्रेट तापमान में वृद्धि के कारण 400 ग्राम प्रति हेक्टेअर उत्पादन कम हो जाता है।”

अध्ययन क्षेत्र आजमगढ़ जनपद में प्रकृति जन्य आर्थिक एवं सामाजिक समस्याएँ एवं कृषि भूमि उपयोग के परिवर्तन में सम्बन्ध निम्न हैं—

- 1—जोतों का छोटा आकार होना
- 2—कृषि के आधार भूत ढाँचों में परिवर्तन न करना
- 3—कृषकों द्वारा नवीन कृषि पद्धति को न अपनाना
- 4—कृषकों के वित्तीय स्रोतों की कमी
- 5—कृषि उत्पाद के भण्डार की समस्या
- 6—मानसून पर निर्भरता
- 7—भूमिगत जल की कमी
- 8—विद्युत आपूर्ति की समस्या
- 9—उत्पादन में कमी
- 10—आर्थिक एवं सामाजिक रूढ़िवादिता
- 11—कृषि शिक्षा नीति की समस्या
- 12—सिंचित भूमि या कृषि तकनीक का अभाव
- 13—कृषि विकास के संसाधनों की आपूर्ति में कमी

निष्कर्ष एवं सुझाव :-

“ अध्ययन क्षेत्र में कृषि भूमि उपयोग के समक्ष तीन महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं—भूमि, पानी, कृषिश्रम, आजादी के बाद हमारे देश में कृषि क्षेत्र विकास पर लगातार ध्यान दिया गया है, किन्तु प्रथम पंचवर्षीय योजना 1951-56 तक कृषि विकास में आत्म निर्भरता प्राप्त करने का प्रयास किया गया लेकिन सफलता न मिलने के कारण अनेक समस्याएँ विद्यमान थी। कृषि भूमि एवं फसल उत्पादकता में 1966-67 हरित क्रान्ति के माध्यम से कृषि भूमि एवं फसल उत्पादकता में सफलता प्राप्त हुई।” जो निम्न बिन्दुओं के द्वारा स्पष्ट किया गया है—

1—अध्ययन क्षेत्र में कृषि भूमि सुधार के द्वारा कृषि अयोग्य भूमि को भूमि संरक्षण के द्वारा बंजर भूमि को कृषि भूमि में बदलाव किया जाना चाहिए।

2—कृषि भूमि में छोटे जोतों को बड़े जोतों के चकबन्दी किया जाना चाहिए तथा कृषि के विशाल क्षेत्रों में वैज्ञानिक कृषि तकनीक के माध्यम से फसल उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

3—कृषि भूमि उपयोग का विकास , मिट्टी उर्वरता, पानी, बीज उर्वरता एवं श्रम तकनीक यन्त्र आदि उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

4—आजमगढ़ जनपद के दक्षिणी भागों में शुष्क कृषि पद्धति के माध्यम से कम सिंचाई के फसलों का चुनाव कृषि की जा सकती है तथा खेतों में चकण भी आवश्यक है।

5—कृषि प्रणाली में बदलाव करके वैज्ञानिक कृषि पद्धति एवं मुद्रायनी फसलों का उत्पादन करके मुद्रा प्राप्त की जा सकती है जैसे तमसा नदी के तट पर लाल मिर्च की कृषि आदि।

6—सिंचाई साधनों का विकास विभिन्न प्रखण्डों पर कृषि भूमि विकास ऋण बैंक की व्यवस्था की जा सकती है जिससे कृषकों को पूजी की कमी न हो सके।

7—कृषि भूमि उपयोग का जैविक कृषि को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे पर्यावरणीय समस्या कम हो सके।

8—कृषि भूमि उपयोग पर आधारित उद्योगों के विकास के सरकार द्वारा समय समय पर कृषक प्रशिक्षण एवं उद्योगों के श्रमिकों को प्रशिक्षण देकर उद्योगों को समृद्ध बनाया जा सकता है। चीनी उद्योग, डेयरी उद्योग, आटा मिल उद्योग, दलहन उद्योग, तेल उद्योग आदि।

9—कृषि भूमि उपयोग के अन्तर्गत मृदा परीक्षण समय-समय पर कृषकों को निःशुल्क करवाना चाहिए। मृदा की उर्बरा शक्ति के अनुसार फसलों का चुनाव किया जाना चाहिए।

10—कृषि भूमि उपयोग के क्षेत्रों में रासायनिक उर्बरक के स्थान पर जैविक उर्बरक का उपयोग किया जाना चाहिए। इस प्रकार कृषि भूमि उपयोग का अध्ययन क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। शोधार्थी भूमि उपयोग के अन्तर्गत फसल वितरण के प्रारूप का मूल्यांकन अध्ययन क्षेत्र में किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1—डॉ० आर० सी० तिवारी, डॉ० बी० एन० सिंह : कृषि भूगोल, 2010, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृष्ठ सं० 88

2—सारणी संख्या 1.1, जनपद सांख्यिकीय पत्रिका आजमगढ़, 2015-16, पृष्ठ सं०-17

3—योजना पत्रिका दिसम्बर 2015, पृष्ठ संख्या 13, नई दिल्ली

4—डॉ० आर० सी० तिवारी—कृषि भूगोल, 2010, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृष्ठ सं० 290

5—श्रवण कुमार मीणा : जर्नल पत्र मार्च 2018 , पृष्ठ सं० 18, 21 शृंखला एक शोध पत्र।

6—माजिद हुसैन : डॉ० एल० एन० वर्मा : कृषि भूगोल, 2010 , रावत पब्लिकेशन, जयपुर पृष्ठ सं० 104, 105